कीर्त्तन रस-स्वरूप

श्री श्री आनन्दमयी चेरिटेबल सोसाइटी

प्रकाशक
श्री श्री आनन्दमयी चेरिटेबल सोसाइटी
भदैनी, वाराणसी।

सर्वस्वत्व सुरक्षित

द्वितीय संस्करण, १९७८

मूल्य :
Rs25 00

मुद्रक
वर्द्धमान मुद्रणालय,
जवाहरनगर कालोनी,
वाराणसी

निवेदन

श्रीश्रीमाँ की असीम कृपा तथा भक्तवृन्दों के एकान्त आग्रह से "कीर्त्तन रस-स्वरूप" ग्रन्थ प्रकाशित किया गया। इस बृहत् और विचित्र संकलन में अनेक दुष्प्राप्य तथा लुप्त-प्राय उत्कृष्ट संगीतों का संग्रह किया गया है। इसके सिवाय और भी कुछ संगीत हैं जो किसी दूसरे स्थान में नहीं मिलते और मातृभक्तों के पास जो अमूल्य हैं—जैसे, श्रीश्रीमाँ के मुख के स्वतःस्फूर्त सङ्गीत, श्रीश्रीमाँ के मुख से गीत तथा नानीजी के द्वारा रचित सङ्गीत। माँ प्रायः कहा करती हैं,—"तुम्हारे इस शरीर के सभी अस्तव्यस्त हैं, नहीं देखते!" माँ के इस "अस्तव्यस्त" ख्याल ने वाङ्मयी मूर्ति प्राप्त कर ली है—माँ के मुख के इन स्वतःस्फूर्त संगीतों के माध्यम से।

लेखक अपने लिखित ग्रन्थ में तथा गायक अपने रचित और गीत संगीत में निज हृदय का भाव संचारित कर देते हैं। इसी कारण जो उनका ग्रन्थ पढ़ता है या उनके संगीत गाता है, उसके मन में लेखक और गायक का भाव उत्पन्न हो जाता है। माँ के द्वारा रचित तथा गीत संगीतों में भी माँ ने अपना भाव संचारित कर दिया है जो मातृभक्त उन संगीतों को गाता है उसके हृदय में वह भाव उत्पन्न होने से उसका शरीर-मन रोमांचित तथा पुलकित हो उठता है।

अनेक प्राचीन मन्त्र-साधकों के संगीत भी इस ग्रन्थ में सम्मिलित कर दिये गये हैं। हिन्दी, बंगला दोनों प्रकार के संगीत हैं। बंगला शब्दों के उच्चारण के कुछ नियम ग्रन्थ के प्रथमांश की पादटीका में दिये गये हैं। इससे बंगला संगीत गाने में सहायता होगी।

श्रीश्रीमाँ के आश्रमों में कुछ स्तुतियाँ नित्य पढ़ी जाती हैं वे तथा साथ-साथ देव-देवियों की अनेक उत्तम स्तुतियाँ भी इस ग्रन्थ में सम्मिलित कर दी गयी हैं।

"कीर्त्तन रस-स्वरूप" सङ्कलन की परिकल्पना, प्रस्तुति तथा नामकरण हुआ था स्वयं माँ की प्रेरणा से। इस ग्रन्थ में सन्निवेशित संगीत गाकर, सुनकर और पढ़कर रसास्वादन कर सकने से मातृस्मृति जाग उठती है तथा मातृ-संग का फल मिलता है। इसी रसास्वादन के सुयोग को सहजलभ्य कर देने के उद्देश्य से ही यह "कीर्तन रस-स्वरूप" पुस्तक प्रकाशित कर दी गयी।

प्रकाशक

विषय-सूची

विषय				पृष्ठांक
श्रीश्रीमाँ के श्रीमुख के संगीत (इतिहास सहित)	....			१
श्रीश्रीमाँ के स्वतःस्फूर्त संगीत	....	....		१७
श्रीश्रीमाँ के द्वारा गीत संगीत	....	....		३४
श्रीमुक्तानन्द गिरि (नानोजी) रचित और गीत संगीत	....			४७
श्रीमौनानन्द पर्वत (भाईजी) रचित संगीत	....			५३
श्रीश्रीमाँ के आश्रम में गीत भजन कीर्तन	....			६१
सन्ध्या कीर्तन	....	....	....	६७
आरती	....	....	....	६९
स्तवावली	....	....	....	७८
नामपद	....	....	....	१६७
नामयज्ञ	....	....	....	१८१
संगीत	....	....	....	१९७
सहस्रनामस्तोत्रम्	....	....	....	३२०
परिशिष्ट	....	....	....	४५२

■